Received: Mar '22
Revised:
Accepted: Apr '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

STUDY OF POLITICAL INTEREST, PARTICIPATION, AND AWARENESS AMONG INDIAN CITIZENS

भारतीय नागरिकों में राजनीतिक अभिरूचि सहभागिता एवं सजगता का अध्ययन

Dr. N. K. Somani[1] and Mr. Hariram[2]
[1]Associate Professor, Department of Political Science, Tantia University, Sri Ganganagar, Rajasthan, India
[2]Research Scholar, Department of Political Science, University, Sri Ganganagar, Rajasthan, India

ABSTRACT

The person who has a permanent feeling of love for the country in his heart will take more interest in those things, including his political participation. If his inclination is towards elections, then he will increase his election participation. If he is inclined towards sports, then he will increase his chances of participating in sports. Interest is an internal driving force. It also affects the behaviour of the citizen and his psychology. It can be in direct form as well as in indirect form. In India, the main factors influencing political interest, participation, and awareness among citizens are clearly visible, which we divide into three main categories.

*1. **One goal**: how should society be organised?*

*2. **Methods:** The easiest and most effective way to achieve this goal All this determines at what level the political will of the citizen is awakened.*

If we look at the person's interest in politics and their participation in it, then we will calculate his family's activism in politics, representation of the family in panchayats, major election issues, reasons for participating in elections, entry into politics, participation in political discussions, etc. That part of society in our country in which till now people were indifferent towards politics has now started taking an interest in politics. There is no doubt that the first element of politicisation is the generation of interest in politics, and the second element of politicisation is the dissemination of political knowledge in society or any part of society where people do not have any knowledge or information about politics. Are. Political awareness refers to an awareness of the political system and knowledge about political institutions and processes.

जिस व्यक्ति के हृदय में स्वदेश प्रेम का स्थाईभाव होता है वह उन बातों में अधिक अभिरुचि लेकर अपनी राजनीतिक सहभागिता का समावेश करेगा। यदि उसका झुकाव चुनाव की तरफ है तो वह चुनाव सहभागिता की ओर बढ़ेगा। यदि उसका झुकाव खेल की तरफ है तो वह खेल की सहभागिता की ओर बढेगा। अभिरुचि एक आंतरिक प्रेरक शक्ति है। नागरिक के व्यवहार और उसके मनोविज्ञान को भी प्रभावित करती है। यह प्रत्यक्ष रुप में भी हो सकती है और अप्रत्यक्ष रूप में भी हो सकती है। भारत में नागरिकों में राजनीतिक अभिरुचि सहभागिता तथा सजगता को प्रभावित करने वालों में प्रमुख कारकों प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है जिसे हम मुख्य दौर में विभक्त करते हैं।

***एक लक्ष्यः**–समाज को कैसे संगठित किया जाना चाहिए?*

***विधियांः**– इस लक्ष्य कोप्राप्त करने का सबसे आसान और प्रभावी तरीका। यह सभी निश्चित करता है नागरिक की राजनीतिक इच्छा शक्ति पर किस स्तर पर जागृत हैं।*

यदि हम व्यक्ति की राजनीति में अभिरूचि के साथ उनकी इसमें सहभागिता को देखें तो हमें उसके परिवार की राजनीति में सक्रियता, परिवार का पंचायतों में प्रतिनिधित्व, चुनाव के प्रमुख मुद्दे, चुनाव में भाग लेने का कारण, राजनीति में प्रवेश, राजनीतिक चर्चाओ में भागीदारी इत्यादि का आंकलन करना होगा। हमारे देश में समाज का वह भाग जिसमें अब तक लोग राजनीति के प्रति उदासीन थे व अब राजनीति में रूचि लेने चले है। इसमें कोई संदेह नही है कि राजनीति के प्रति लोगों में अभिरूचि उत्पन्न होना राजनीतिकरण का प्रथम तत्व है एवं राजनीतिकरण का दूसरा तत्व समाज या समाज के किसी भाग में वहां लोगों को राजनीति के विषय में कोई ज्ञान या सूचनाएँ उपलब्ध नही थी वहां राजनीतिक ज्ञान का प्रसार हो। राजनीतिक सजगता राजनीतिक सस्थाओं एवं प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी के साथ राजनीतिक व्यवस्था के प्रति समक्ष को प्रदर्शित करता है।

Keywords: चुनाव, मतदान, संचार इत्यादि।

1. प्राकृतिक स्रोतः– जो प्रकृति में प्रत्यक्ष देखेगा अपने समय में उसी के अनुसार वह अपनी अभिरुचि को जागृत करेगा। उस में प्राकृतिक तत्वों का योगदान सबसे ज्यादा होगा।

2. अर्जित स्रोत : मानसिक विकास के साथ ही व्यक्ति आवश्यकता के अनुसार भी अपनी अभिरुचि में परिवर्तन करता है।

राजनीतिक सहभागिता

राजनीति की क्रियाओं में जनता की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भागीदारी को राजनीतिक सहभागिता कहेंगे।

जो हमारे व्यवहार को प्रदर्शित करती है जैस मतदान, उदाहरण के तौर पर हम इसे स्पष्ट कर सकते हैं कि मतदान भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से होता है जिस प्रकार से नागरिक पंचायत चुनाव या लोकसभा चुनाव, विधानसभा के चुनाव में प्रत्यक्ष अपने प्रतिनिधियों को चुनता है, उसी प्रकार से वह अप्रत्यक्ष रूप से राज्यसभा के प्रतिनिधियों का चुनाव अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से करता है। वर्तमान में यदि हम इसका सबसे अच्छा उदाहरण देखना चाहे तो हमारे राजस्थान राज्य में जो कार्यक्रम चलता है प्रशासन गांव के संग जो कार्यक्रम चलता है।

जो अभियान चलता है उसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जनता और सरकार अपनी भागीदारी देते हैं। दबाव समूह के माध्यम से दबाव बनाना यह अप्रत्यक्ष प्रभाव है।

राजनीतिक सजगता (चेतना)

नागरिक कि जब चेतना शक्ति सक्रिय होगी तो उसकी राजनीतिक सहभागिता शासन की भागीदारी में उसके प्रभाव को स्पष्ट करेगी। इसे प्रमुख तीन बिंदु प्रभावित करते हैं।

1. शिक्षा– नागरिक की सजगता को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है जो व्यक्ति जितना शिक्षित होगा जितने उसके उच्च विचार होंगे जितनी विचारधाराओं को समझ पाएगा उसकी सोच उतनी ही प्रभावी होगी।

2 विचारों की स्थिति– नागरिकों की चेतना शक्ति उसके विचारों को बहुत ज्यादा प्रभावित करेगी। वह राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार अपनी सजगता का प्रयोग करेगा। जैसे वह किसान है तो वह किसान के दृष्टिकोण कोप्रभावी मान करके अपने विचारों की स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

3 जनसंख्या– जहां जनसंख्या कम होगी वहां नागरिकों का सीधा संबंध आसानी से शासन व्यवस्था के साथ रहेगा। उदाहरण हरियाणा राज्य। जहां जनसंख्या अधिक होगी वहां उतना आसानी से जन शासन व्यवस्था से संबंध आसानी से नहीं बन पाएंगे। उदाहरण उत्तर प्रदेश राज्य।

परन्त जिस तरह नागरिकों के मध्य जो समानता एवं स्वतंत्रता हमें दिखाई देती है, परन्तु वैसी होती नही है। समाज में व्यक्ति के जीवन स्तर, जीवन मूल्य, विष्वास, कार्य प्रणाली एवं उनकी आदतों में अन्तर देखने को मिलता है। यह अन्तर उनकी अनुवांशिकता, पर्यावरण, शिक्षा आदि के कारण होता है। ये सभी कारक व्यक्ति के चिन्तन व सोच को प्रभावित करते है। चाहे मतदान अचरण हो या किसी अन्य राजनीतिक पक्ष से सम्बन्धित कोई सामाजिक क्रियाः इसमें वैयक्तिक सोच की प्रभाव भिन्नता अवष्य ही अपना प्रभाव दर्शाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भौतिक संस्कृति का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर हो रहा है। ऐसी दशा में राजनीतिक संस्कृति में भौतिक संसाधनों का प्रभाव बढता जा रहा है। यह बढता प्रभाव मतदान व्यवहार में भी अपना प्रभाव मतदान व्यवहार में भी अपना प्रभाव दर्शाता है। यहां तक कि मतदान के लिए पूँजी क प्रभाव उल्लेखनीय भूमिका का कार्य करता है। धन के बल के प्रभाव पर मतदाता अपने अभिमत तक को परिवर्तित कर लेते है। तथा मतदान की प्रक्रिया में मतदान स्थल तक वाहनों द्वारा मतदाताओं को लाने ले जाने की सुविधा प्रदान करना भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है। राजनारायन (1972) के अनुसार अशिक्षित मतदाता मतदान के लिए अपने घर गांव के प्रभावशाली व्यक्ति के इशारे पर भी मतदान कर लेते है। जबकि शिक्षित लोग प्रत्याशी, राजनीतिक दल की नीतियों तथा चुनाव घोषणा पत्र के आधार पर मतदान करने का निर्णय लेते है। तो कुछ लोग चुनाव मैदान में उतरे प्रत्याशियों के व्यक्तित्व को देखकर भी मतदान करते है। तो कुछ जीत हार की संभावनाओं को लेकर, तो कुछ मतदाता जातिगत आधार पर इन सभी तथ्यों के साथ मतदान व्यवहार में हिंसा का पक्ष भी कही–कही देखने को मिलता है।

हमारे देश में राजनीतिक मुद्दो एवं सरकारी कामकाज के बारे में जानकारी अच्छी होगी तो उनकी राजनीतिक प्रक्रियाओं में अर्थपूर्ण भागीदारी बढेगी जिससे अच्छे राजनीतिक निर्णय लेने में सुविधा होगी। यदि हम व्यक्ति के राजनीति में अभिरूचि के साथ उनके इसमें सहभागिता को देखें तो हम उसके परिवार की रजनीति में सक्रियता, परिवार का पंचायतो में प्रतिनिधित्व, पंचायत चुनाव में भाग लेने की प्रेरणा, चुनाव के प्रमुख मुद्दे, चुनाव में उम्मीदवारों की संख्या, मत प्राप्ति का आधार, चुनाव में भाग लेने का कारण, राजनीति प्रवेश, राजनीतिक दल से सम्बद्धता, संचार माध्यमों के प्रति जागरूकता, राजनीतिक चर्चाओं में भागीदारी, चर्चाओं के विषय, राजनीतिक क्षेत्र में महत्वकांक्षा इत्यादि का आंकलन करना होगा।

निष्कर्ष

इस अनुभाविक अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तत्वों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि चुनाव में ग्रामीण

विकास, सामाजिक सुधार, स्थानीय समस्याओं का निराकरण, शासकीय क्रियाओं का क्रियानवयन, कमजोर वर्गो का उत्थान जैसे मुद्दे प्रमुख रहते है। वर्तमान में भारत राज्य कर्नाटक राज्य में हाल ही में विधानसभा चुनाव 2023 में सम्पन्न हुए है उसमें राजनीतिक सहभागिता स्पष्ट दिखाई दी है। कर्नाटक में लिंगायत और वोकालिंगायत दोनों समुदायों की राजनीतिक अभिरूचि का प्रभाव हमें स्पष्ट रूप से मतदान प्रक्रिया पर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया है। जिसने राजनीतिक सहभागिता के द्वारा पूरे चुनाव प्रणाली के परिणामों को इतना प्रभावित किया है कि राजनीतिक सलाहकार भी इसका अनुमान धरातल पर स्पष्ट रूप से नहीं लगा पाये। इस प्रकार व्यक्ति की राजनीतिक अभिरूचि और वहां की सांस्कृतिक मान्यताएं बहुत हद तक राजनीतिक सहभागिता का प्रभावित करते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इकबाल, नारायण. पंचायती राज की उभरती अवधारणा : योजना और लोकतन्त्र,सरस्वती प्रकाशन, शहादरा दिल्ली 2008, पृष्ठ सं. 19
2. पाठक, डी.एन. राजनीतिक व्यवहार, अहलावत प्रकाशन, नई दिल्ली 2016, पृष्ठ सं. 24
3. शर्मा, चन्द्रप्रकाश. राजनीतिक चेतना, रचना प्रकाशन, आगरा 2019, पृष्ठ सं. 16
4. संदर्भ सूची : एनसीआरटी क्लास 12 पॉलीटिकल साइंस अध्याय 7